Visit **Dwarkadheeshvastu.com** For

FREE Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers

****

All Music is also available in **CD** format. **CD Cover** can also be print with your Firm Name

****

We also provide this whole Music and Data in **PENDRIVE** and **EXTERNAL HARD DISK.**

Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

गणेश चालीसा

हिन्दी अनुवाद

श्री गणेश चालीसा प्रारम्भ

जय जय जय वंदन भुवन, नंदन गौरि गणेश।
दुख द्वंद्वन फंदन हरन, सुंदर सुवन महेश॥

हे पार्वती को आनंद देने वाले द्वंद्वों को हरने वाले, महेश के सुंदर लाडले, जगत-वंद्य गणेश! आपकी जय हो।

जयति शंभु सुत गौरी नंदन।
विघ्न हरन नासन भव फंदन॥

हे शंभु-गौरी पुत्र गणेश, आपकी जय हो। आप विघ्न हरण और भव बंधनों को नष्ट करने वाले हैं।

जय गणनायक जनसुख दायक।
विश्व विनायक बुद्धि विधायक॥

भक्तों को सुख देने वाले, विश्व गुरु तथा बुद्धि को व्यवस्थित करने वाले गणनायक आपकी जय हो।

एक रदन गज बदन विराजत।
वक्रतुंड शुचि शुंड सुसाजत॥

हे वक्रतुंड! आपके गजमुख में एक दांत विराजमान है और आपकी पवित्र सूंड भी सुसज्जित है।

तिलक त्रिपुण्ड भाल शशि सोहत।
छबि लखि सुर नर मुनि मन मोहत॥

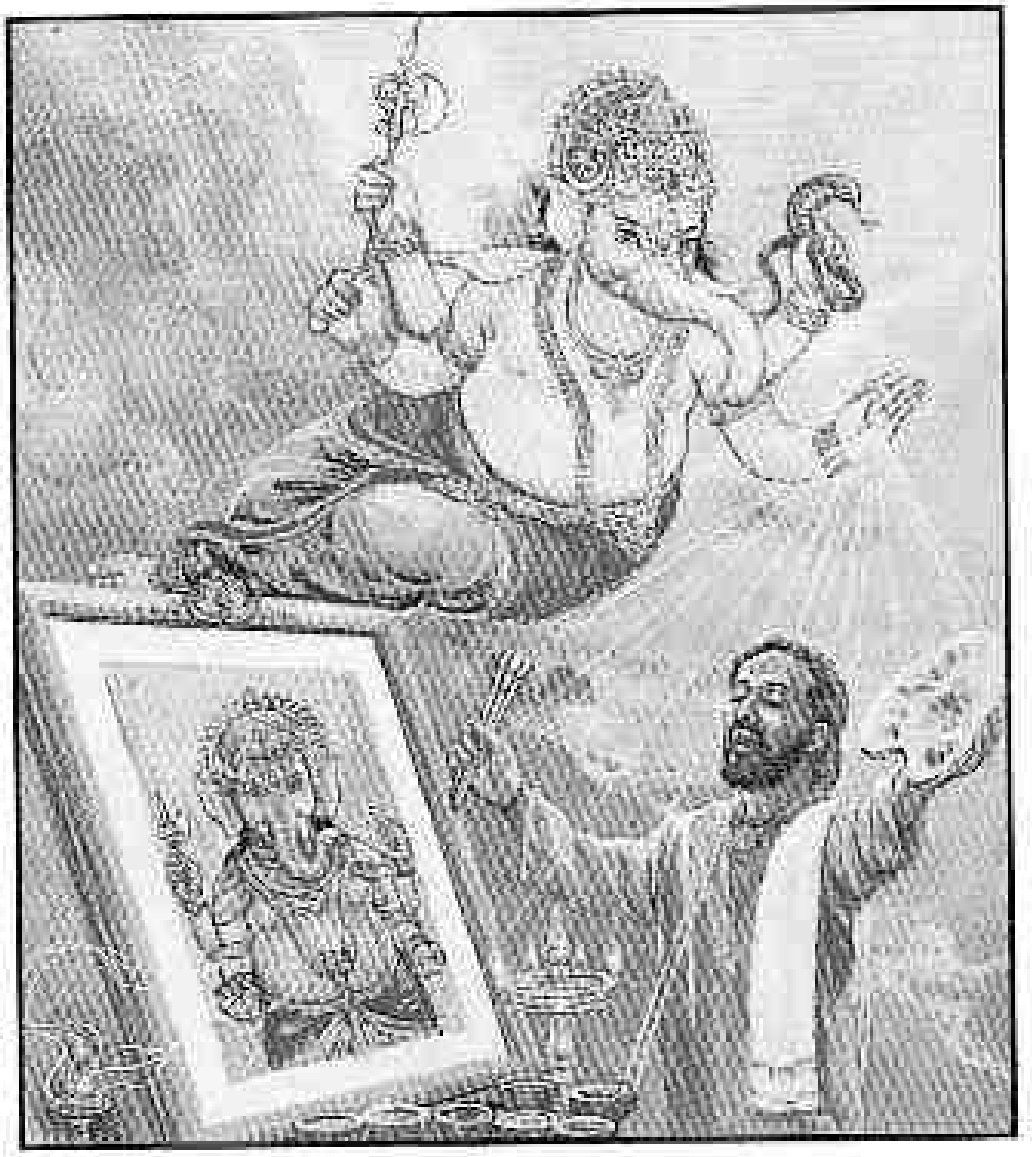

आपके मस्तक पर त्रिपुंड और चंद्रमा सुशोभित हैं। आपका सौंदर्य सबके मन को मोहने वाला है।

उर मणिमाल सरोरुह लोचन।
रत्न मुकुट सिर सोच विमोचन॥

आपके वक्ष पर मणिमाला है, कमलसम नेत्र हैं, रत्नों का मुकुट है। आप भक्तों की चिंता हरते हैं।

कर कुठार शुचि सुभग त्रिशूलम्।
मोदक भोग सुगंधित फूलम्॥

आपके हाथों में पवित्र कुठार और त्रिशूल है। आपको लड्डुओं का भोग और सुगंधित फूल प्रिय हैं।

सुंदर पीताम्बर तन साजित।
चरण पादुका मुनि मन राजित।।

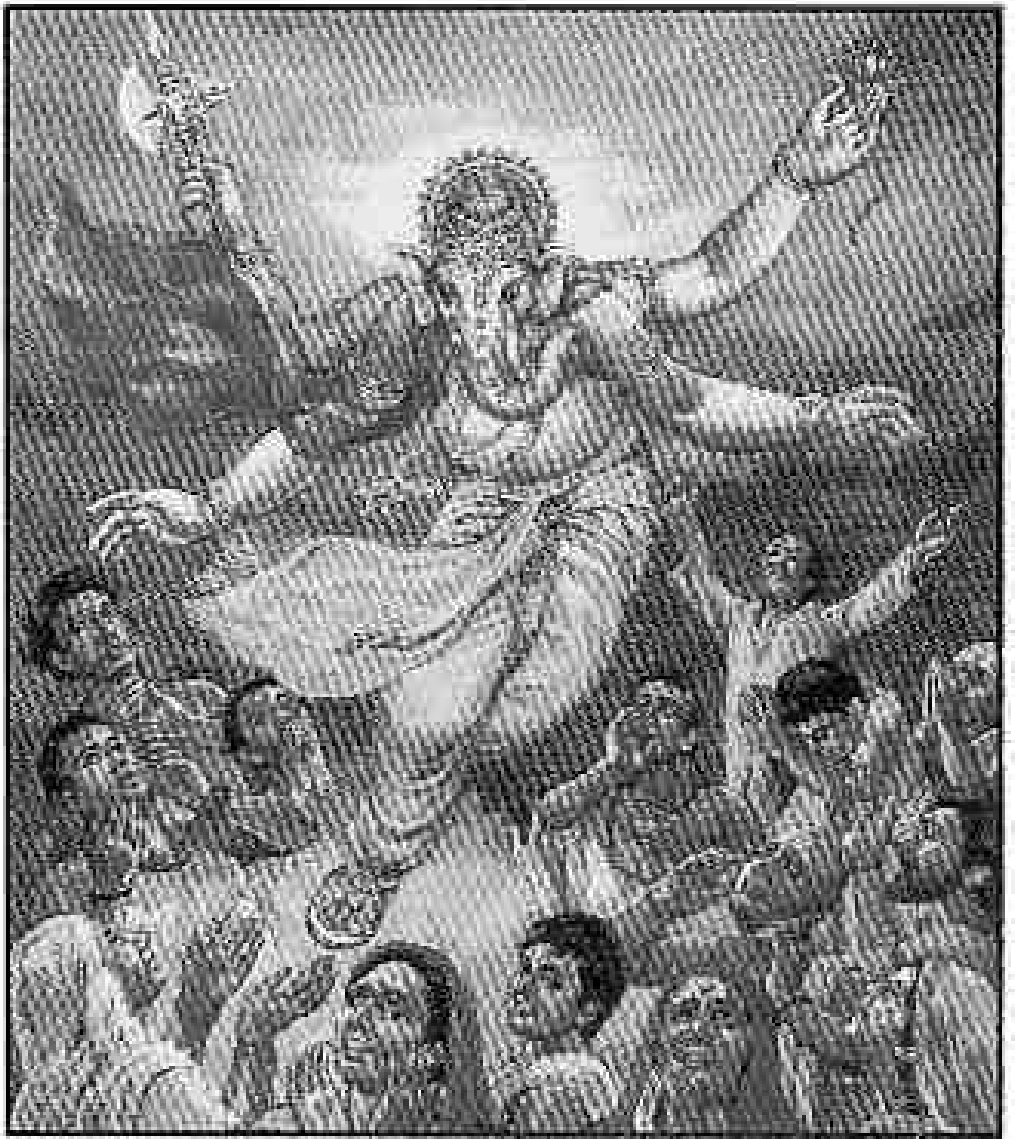

आप सुंदर पीले रेशमी वस्त्र से शोभित हैं। आपकी चरणपादुका भक्तों का मन लुभाने वाली है।

धनि शिव सुवन भुवन सुख दाता।
गौरी ललन षडानन भ्राता॥

हे जगत को सुख देने वाले शिव-पुत्र, गौरी-नंदन और कार्तिकेय के भाई! आप धन्य हैं।

ऋद्धि सिद्धि तव चंवर सुढारहिं।
मूषक वाहन सोहित द्वारहिं॥

ऋद्धियां-सिद्धियां आपकी सेवा में चंवर डुलाती हैं और आपका वाहन मूषक दरवाजे पर सुशोभित रहता है।

तव महिमा को बरनै पारा।
जन्म चरित्र विचित्र तुम्हारा॥

चूंकि आपका जीवन-चरित्र अद्भुत है, इसलिए कौन आपकी महिमा का वर्णन कर सकता है?

एक असुर शिवरूप बनावै।
गौरिहिं छलन हेतु तहं आवै॥

गौरी (पार्वती) को छलने के निमित्त एक असुर शिव का रूप धारण कर वहां आया करता था।

एहि कारण ते श्री शिव प्यारी।
निज तन मैल मूर्ति रचि डारी॥

इस कारण शिव-प्रिया पार्वतीजी ने अपने शरीर से मैल उतारकर उससे एक मूर्ति की रचना कर डाली।

सो निज सुत करि गृह रखवारे।
द्वारपाल सम तेहिं बैठारे॥

उन्होंने आपको अपना पुत्र कहकर घर की रक्षा के लिए द्वारपाल के समान घर के द्वार पर बैठा दिया।

जबहिं स्वयं श्री शिव तहं आए।
बिनु पहिचान जान नहिं पाए॥

जब वहां शिवजी पधारे तब उन्हें न पहचानने के कारण आपने घर के अंदर नहीं जाने दिया।

पूछ्यो शिव हो किनके लाला।
बोलत भे तुम वचन रसाला॥

शिवजी ने जब आपसे पूछा, आप किसके पुत्र हैं? तो आपने बड़ी ही मधुर वाणी में उन्हें बताया—

मैं हूं गौरी सुत सुनि लीजै।
आगे पग न भवन हित दीजै॥

ध्यान देकर सुनिए, मैं गौरी का पुत्र गणेश हूं। अब कृपया आप घर की ओर अपने पैर न बढ़ावें।

आवहिं मातु बूझि तब जाओ।
बालक से जनि बात बढ़ाओ॥

मैं मां से पूछकर आता हूं, तभी आप भीतर जा सकेंगे। मुझे बालक जानकर अधिक बात न बढ़ाइए।

चलन चह्यो शिव बचन न मान्यो।
तब ह्वै क्रुद्ध युद्ध तुम ठान्यो॥

जब शिवजी ने बात न मानी और आगे बढ़ना चाहा तब रोष में आकर आपने शिव से युद्ध ठान लिया।

तत्क्षण नहिं कछु शंभु बिचार्यो।
गहि त्रिशूल भूल वश मार्यो॥

शिवजी ने कुछ भी विचार किए बिना तत्काल त्रिशूल पकड़ा और भूल से आपके ऊपर प्रहार कर दिया।

शिरिष फूल सम सिर कटि गयउ।
छट उड़ि लोप गगन महं भयउ।।

शिरीष-पुष्प के समान आपका कोमल सिर कट गया और तुरंत उड़कर आकाश में विलीन हो गया।

गयो शंभु जब भवन मंझारी।
जहं बैठी गिरिराज कुमारी॥

जब शिवजी भवन के भीतर वहां गए जहां पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वतीजी बैठी थीं—

पूछे शिव निज मन मुसकाये।
कहहु सती सुत कहं ते जाये॥

तब मन-ही-मन मुस्कराकर शिवजी ने पूछा, 'हे सती! कहो, तुमने अपने पुत्र को कैसे जन्म दिया?'

खुलिगे भेद कथा सुनि सारी।
गिरी विकल गिरिराज दुलारी॥

संपूर्ण कथा सुनते ही भेद खुल गया। हिमालय की पुत्री गौरी विकल होकर धरती पर गिर पड़ीं।

कियो न भल स्वामी अब जाओ।
लाओ शीष जहां से पाओ॥

और बोली, 'हे स्वामी! आपने यह अच्छा नहीं किया। आप कैसे भी हो, मुझे मेरे पुत्र का सिर लाकर दो।'

चल्यो विष्णु संग शिव विज्ञानी।
मिल्यो न सो हस्तिहिं सिर आनी॥

सिर न मिलने पर विज्ञान में निपुण शिवजी विष्णुजी के साथ जाकर हाथी का सिर ले आए।

धड़ ऊपर स्थित कर दीन्ह्यो।
प्राण वायु संचालन कीन्ह्यो॥

तत्पश्चात् उस सिर को उन्होंने गणेश के धड़ के ऊपर स्थित कर उसमें प्राणवायु का संचार कर दिया।

श्री गणेश तब नाम धरायो।
विद्या बुद्धि अमर वर पायो॥

शिवजी ने आपका नाम श्रीगणेश रखा। इस प्रकार आपने विद्या-बुद्धि के साथ अमरत्व का वरदान पाया।

भे प्रभु प्रथम पूज्य सुखदायक।
विघ्न विनाशक बुद्धि विधायक॥

आपकी सर्वप्रथम पूजा सदा सुखदायी होती है जिससे विघ्नों का नाश एवं बुद्धि में वृद्धि होती है।

प्रथमहिं नाम लेत तव जोई।
जग कहं सकल काज सिध होई॥

जब भी कोई कार्यारंभ से पहले आपका नाम लेता है, संसार में उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

सुमिरहिं तुमहिं मिलहिं सुख नाना।
बिनु तव कृपा न कहुं कल्याना॥

आपके स्मरण मात्र से ही नाना सुख उपलब्ध हो जाते हैं। आपकी कृपा के बिना कहीं कल्याण नहीं।

तुम्हरहिं शाप भयो जग अंकित।
भादौं चौथ चंद्र अकलंकित॥

आपके शाप से चंद्रमा कलंकित हो गया। तब से भादों की चतुर्थी को कोई चंद्र-दर्शन नहीं करता।

जबहिं परीक्षा शिव तुहिं लीन्हा।
प्रदक्षिणा पृथ्वी कहि दीन्हा॥

जब शिवजी ने आपकी परीक्षा लेनी चाही, तब उन्होंने आपको पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने को कहा।

षड्मुख चल्यो मयूर उड़ाई।
बैठि रचे तुम सहज उपाई॥

प्रदक्षिणा के लिए कार्तिकेय मयूर पर उड़ चले। पर आपने बैठे-बैठे एक सरल उपाय रच डाला।

राम नाम महि पर लिखि अंका।
कीन्ह प्रदक्षिण तजि मन शंका॥

आपने पृथ्वी पर राम का नाम लिखा और मन की शंकाओं को त्याग प्रदक्षिणा कर डाली।

श्री पितु मातु चरण धरि लीन्ह्यो।
ता कहं सात प्रदक्षिण कीन्ह्यो॥

आपने भक्तिपूर्वक माता और पिता के चरण पकड़ लिए और उनकी सात परिक्रमाएं कर लीं।

पृथ्वी परिक्रमा फल पायो।
अस लखि सुरन सुमन बरसायो॥

इस तरह आपने पूरी पृथ्वी की परिक्रमा का फल पा लिया। ऐसा देख देवगणों ने पुष्प वृष्टि की।

'सुंदरदास' राम के चेरा।
दुर्वासा आश्रम धरि डेरा॥

सुंदरदास नामक राम के दास, जिनका डेरा ऋषि दुर्वासा का आश्रम था, वहीं रहते हुए—

विरच्यो श्रीगणेश चालीसा।
शिव पुराण वर्णित योगीशा॥

श्री गणेश चालीसा की वैसी ही रचना की जैसी कि शिवपुराण की महान ऋषियों ने की थी।

नित्य गजानन जो गुण गावत।
गृह बसि सुमति परम सुख पावत॥

जो श्रीगणेश के गुणों का नित्य गान करता है, वह गृहस्थ में भी परमसुख प्राप्त करता है।

जन धन धान्य सुवन सुखदायक।
देहिं सकल शुभ श्री गणनायक॥

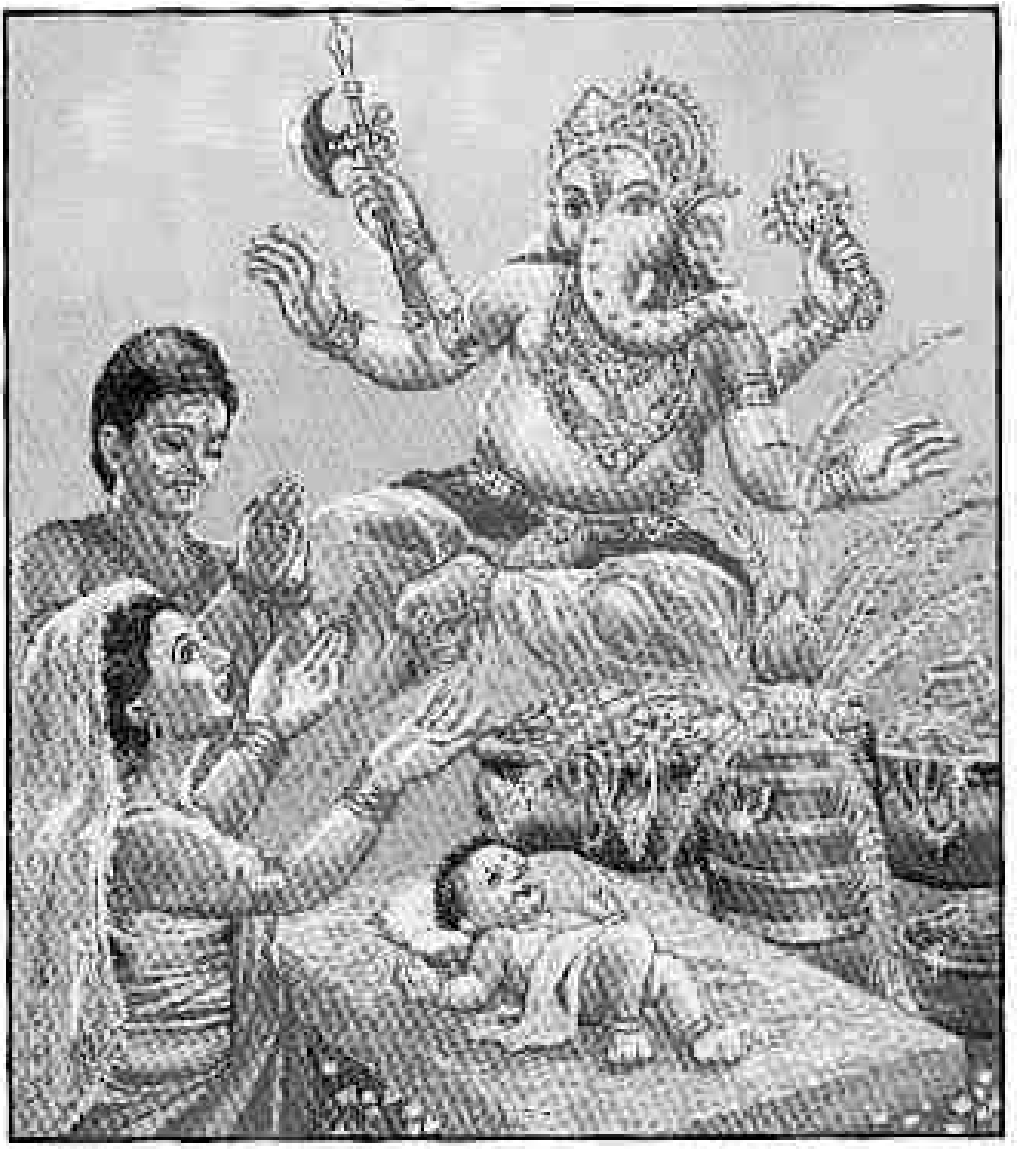

धन-धान्य, पुत्रादि सुखों को देने वाले श्री गणेशजी अपने भक्तों को सारी शुभ वस्तुएं प्रदान करते हैं।

श्री गणेश यह चालिसा, पाठ करै धरि ध्यान।
नित नव मंगल मोद लहि, मिलै जगत सम्मान॥

जो ध्यान से इस चालीसा का पाठ करता है, वह नित्य नव मंगल, सुख, प्रसन्नता और सम्मान पाता है।

द्वै सहस्त्र दस विक्रमी, भाद्र कृष्ण तिथि गंग।
पूरन चालीसा भयो, सुंदर भक्ति अभंग॥

वि.सं. २०१० भाद्रपद, कृ. तृतीया को यह चालीसा पूर्ण हुआ और 'सुंदरदास' को भक्ति-सुख मिला।

एकदन्त महात्म्य स्तोत्रम्

ज्ञानार्थवाचको गंश्च गणश्च निर्वाणवाचकः।
तयोरीशं परं ब्रह्म गणेशं प्रणमाम्यहम्॥

ज्ञान के प्रतीक 'ग' और निर्वाण के प्रतीक 'ण' के समन्वय से जो 'गण' बना है, उसके जो स्वामी हैं, उन परब्रह्म स्वरूप गणेशजी को मैं प्रणाम करता हूं।

एक शब्दः प्रधानार्थो दन्तश्च बलवाचकः।
बलं प्रधानं सर्वस्मादेकदन्तं नमाम्यहम्॥

प्रधानवाचक 'एक' तथा 'बल' के प्रतीक दंत अर्थात एकदंत, जो शक्तिशाली हैं, उनको मैं नमस्कार करता हूं।

दीनार्थवाचको हेश्च रम्बः पालकवाचकः।
दीनानां परिपालकं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्॥

हे, शब्द दीनार्थक है जबकि अम्ब शब्द पालनकर्ता वाचक है। दीनों के परिपालन करने वाले 'हेरम्ब' को मैं प्रणाम करता हूं।

विपत्ति वाचको विघ्नो नायकः खण्डनार्थकः।
विपत्खण्डन कारकं नमामि विघ्ननायकम्॥

विपत्ति के प्रतीक शब्द 'विघ्न' और खंडन के प्रतीक 'नायक' अर्थात विघ्ननाशक को मैं प्रणाम करता हूं।

विष्णुदत्तैश्च नैवेद्यैर्यस्य लम्बोदरं पुरा।
पित्रा दत्तैश्च विविधैर्वन्दे लम्बोदरं च तम्॥

विष्णु प्रदत्त नैवेद्य व पिता शंकर द्वारा प्रदत्त मिष्टान्नों का भक्षण करने से विस्तृत उदर लंबोदर भगवान को मैं प्रणाम करता हूं।

शूर्पाकारौ च यत्कर्णौ विघ्नवारणकारणौ।
सम्पदौ ज्ञानरूपौ च शूर्पकर्णं नमाम्यहम्॥

छाज (सूप) समान कान वाले, संकट दूर कर संपदा देने वाले ज्ञानरूप शूर्पकर्ण की मैं स्तुति करता हूं।

विष्णुप्रसाद पुष्पं च यन्मूर्ध्नि मुनिदत्तकम्।
तद् गजेन्द्रवक्त्रयुक्तं गजवक्त्रं नमाम्यहम्॥

जिनके शीश पर विष्णु प्रसादरूपी पुष्प सुशोभित है, जिनका मुख गज का है, उन गजवक्त्र देव को मैं प्रणाम करता हूं।

गुहस्याग्रे च जातोऽयमाविर्भूतो हरालये।
वन्दे गुहाग्रजं देवं सर्वदेवाग्रपूजितम्॥

शिव परिवार में कार्तिकेय के बाद जन्मे गुहाग्रज देव को मैं प्रणाम करता हूं।

एतन्नामाष्टकं दुर्गे नामभिः संयुतं परम्।
पुत्रस्य पश्य वेदे च तदा कोपं यथा कुरु॥

हे देवी दुर्गा! स्वपुत्र के नाम वाले श्रेष्ठ नामाष्टक स्तोत्र का वेदों में अवलोकन करके ही तुम्हें क्रोध करना चाहिए।

एतन्नामाष्टकं स्तोत्रं नानार्थ संयुतं शुभम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स सुखी सर्वतोजयी॥

इस स्तोत्र का जो त्रिकाल संध्या में पाठ करता है, वह सर्वत्र विजयी व सुखी रहता है।

ते विघ्ना पलायन्ते वैनतेयाद् यथोरगः।
गणेश्वर प्रसादेन महाज्ञानी भवेद् ध्रुवम्॥

उस प्राणी के सम्मुख कष्ट वैसे ही नहीं रहते जैसे गरुड़ के सम्मुख सर्प नहीं रहते। गणेशजी की कृपा से वह प्राणी निश्चित ही ज्ञानी व महान बनता है।

पुत्रार्थी लभते पुत्रं भार्यार्थी विपुलं स्त्रियम्।
महाजडो कवीन्द्रश्च विद्यावांश्च भवेद् ध्रुवम्॥

पुत्राकांक्षी को पुत्र, पत्नी की इच्छा वाले को सुंदर, सुशील स्त्रियों की प्राप्ति होती है। मूढ़ प्राणी भी भगवान गणेश की दया से विद्वान और श्रेष्ठ कवि बन जाता है, यह निश्चित है।

श्री गणपत्यथर्वशीर्षम्

श्री गणेशाय नमः

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवां-सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥ १ ॥

ॐ स्वस्ति न इंद्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पति-र्दधातु॥ २ ॥

ॐ शान्तिः शान्ति : शान्ति ॥

ॐ नमस्ते गणपतये।

त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि।त्वमेव केवलं धर्तासि।त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यं ॥ १ ॥

ऋतं वच्मि।सत्यं वच्मि ॥ २ ॥

अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव

हे विघ्नविनायक ! आप ही इस जगत के कर्त्ता हैं । आप ही इसका पालन करते हैं । आप में ही यह लय को प्राप्त करता है ।

शिष्यम्। अव पश्चात्तात। अव पुरस्तात। अवोत्तरात्तात अव दक्षिणात्तात। अव चोर्ध्वात्तात। अवाधरात्तात। सर्वतो मां पाहि पाहि समंतात॥ ३॥ त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वंमानंदमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानंदाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि॥ ४॥

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि॥ ५॥ त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं। रुद्रस्त्वमिंद्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चंद्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भवः स्वरोम॥ ६॥ गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं

तदनंतरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितं। तारेण ऋद्धं। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्॥ अकारो मध्यमरूपम् अनुस्वारश्चांत्यरूपम्। बिंदुरुत्तररूपम। नादः संधानम्। संहिता संधिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्रीछंदः। गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः ॥ ७॥

एकदंताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दंतिः प्रचोदयात् ॥ ८॥

एकदंतं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारिणम्।
रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्।
रक्तं लंबोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्तगंधानुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।
भक्तानुकंपिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति योनित्यं स योगी योगिनां वरः ॥ ९॥
नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये

नमस्तेऽस्तु लंबोदरायैकदंताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः ॥ १० ॥ एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। सब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पंचमहापापात्प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायंप्रातः प्रयुंजानो अपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विंदति। इदमथर्वशीर्ष-मशिष्याय न देयं। यो यदि मोहाद्दास्यति॥ स पापीयान भवति। सहस्रा वर्तनात। यं यं काममधीते। तं तमनेन साधयेत। अनेन गणपतिमभिषिंचति॥ स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्ननजपति॥ स विद्यावान भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यात। न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वांकुरैर्यजति। स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति॥ स

यशोवान्भवति। स मेधावान्भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति। स वांछितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भि र्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा॥ सिद्धमंत्रो भवति। महाविघ्नात्प्रमुच्यते। महादोषात्प्रमुच्यते॥ महापापात्प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति य एवं वेद।

॥ इत्युपनिषत् ॥

सहनाववतु। सहनौ भुनक्तु। सहवीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ॐ गं गणपतये नमः

संकटनाशन गणपति स्तोत्रम्

श्री गणेशाय नमः

नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थ सिद्धये॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्ष गजवक्त्रं चतुर्थकम्॥
लम्बोदरं पंचमंच षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टम्॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्॥

जपेदगणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत। तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः॥

॥ इति श्री नारदपुराणे संकटनाशनं नाम महागणपतिस्तोत्रं संपूर्णम्॥

श्री गणेश मंत्र

१. श्री महागणपति प्रणव मूलमंत्र: ॐ ।
२. श्री महागणपति प्रणव मूलमंत्र: ॐ गं ॐ ।
३. ॐ गं गणपतये नम: ।
४. ॐ नमो भगवते गजाननाय ।
५. श्री गणेशाय नम: ।
६. ॐ श्री गणेशाय नम: ।
७. ॐ वक्रतुण्डाय हुम् ।
८. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं गौं ग: श्रीन्महा - गणाधिपतये नम: ।
९. ह्रीं श्रीं क्लीं गौं वरदमूर्तये नम: ।
१०. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवते गजाननाय ।
११. ॐ ह्रीं क्लीं नमो गणेश्वराय ब्रह्मरूपाय चारवे सर्वसिद्धि प्रदेयाय ब्रह्मणस्पतये नम: ।

१२. बीजाय भालचन्द्राय गणेशपरमात्मने।
प्रणतक्लेशनाशाय हेरम्बाय नमो नमः।

१३. आपदामपहर्तारं दातारं सुख सम्पदां।
क्षिप्रप्रासादनं देवं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥

१४. नमो गणपते तुभ्यं हेरम्बायैकदन्तिने
स्वानन्दवासिने तुभ्यं ब्रह्मणस्पतये नमः।

१५. श्री गजानन जय गजानन

१६. श्री गजानन जय गजानन जय जय गजानन

१७. शुक्लांबरधरं देवं शशिसूर्यनिभाननम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व
सर्वविघ्नोपशान्तये।

१८. नमस्तस्मै गणेशाय ब्रह्मविद्या-
प्रदायिने।
यस्याऽगस्तायते नाम
विघ्नसागर शोषणे॥

१९. ह्रीं गं ह्रीं गणपतये नमः।

२०. ॐ वक्रतुण्डाय नमः।

२१. महाकर्णाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥

२२. यदभ्रू प्रणिहितां लक्ष्मीं लभन्ते भक्तकोटयः ॥
स्वतन्त्रमेकं नेतारं विघ्नराजं नमाम्यहम् ॥

अष्टोत्तरशत नामावली

ॐ विघ्नेशाय नमः
ॐ विश्ववरदाय नमः
ॐ विश्वचक्षुणे नमः
ॐ जगत्प्रभवे नमः
ॐ हिरण्यरूपाय नमः
ॐ सर्वात्मने नमः
ॐ ज्ञानरूपाय नमः
ॐ जगन्मयाय नमः
ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः
ॐ महाबाहवे नमः
ॐ अमेयाय नमः
ॐ अमितविक्रमाय नमः
ॐ वेदवेद्याय नमः
ॐ महाकालाय नमः
ॐ विद्यानिधये नमः
ॐ अनामयाय नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ सर्वगाय नमः
ॐ शांताय नमः
ॐ गजास्याय नमः
ॐ चित्तेश्वराय नमः
ॐ विगतज्वराय नमः
ॐ विश्वमूर्तये नमः
ॐ अमेयात्मने नमः
ॐ विश्वाधारा य नमः
ॐ सनातनाय नमः
ॐ सामगाय नमः
ॐ प्रियाय नमः
ॐ मंत्रिणे नमः
ॐ सत्त्वाधाराय नमः
ॐ सुराधीशाय नमः

ॐ समस्तसाक्षिणे नमः
ॐ निर्द्रव्याय
ॐ निर्लोकाय नमः
ॐ अमोघविक्रमाय नमः
ॐ निर्मलाय नमः
ॐ पुण्याय नमः
ॐ कामदाय नमः
ॐ कांतिदाय नमः
ॐ कामरूपिणे नमः
ॐ कामपोषिणे नमः
ॐ कमलाक्षाय नमः
ॐ गजाननाय नमः
ॐ सुमुखाय नमः
ॐ शर्मदाय नमः
ॐ मूषकाधिपवाहनाय नमः
ॐ शुद्धाय नमः
ॐ दीर्घतुंडाय नमः
ॐ श्रीपतये नमः
ॐ अनंताय नमः
ॐ मोहवर्जिताय नमः
ॐ वक्रतुंडाय नमः
ॐ शूर्पकर्णाय नमः
ॐ परमाय नमः
ॐ योगीशाय नमः
ॐ योगधाम्ने नमः
ॐ उमासुताय नमः
ॐ आपद्धंत्रे नमः
ॐ एकदंताय नमः
ॐ महाग्रीवाय नमः
ॐ शरण्याय नमः
ॐ सिद्धसेनाय नमः
ॐ सिद्धवेदाय नमः
ॐ करुणाय नमः
ॐ सिद्धाय नमः
ॐ भगवते नमः
ॐ अव्यग्राय नमः
ॐ विकटाय नमः
ॐ कपिलाय नमः

ॐ ढुंढिराजाय नमः
ॐ उग्राय नमः
ॐ भीमोदराय नमः
ॐ शुभाय नमः
ॐ गणाध्यक्षाय नमः
ॐ गणेशाय नमः
ॐ गणाराध्याय नमः
ॐ गणनायकाय नमः
ॐ ज्योति स्वरूपाय नमः
ॐ भूतात्मने नमः
ॐ धूम्रकेतवे नमः
ॐ अनुकूलाय नमः
ॐ कुमारगुरवे नमः
ॐ आनंदाय नमः
ॐ हेरंबाय नमः
ॐ वेदस्तुताय नमः
ॐ नागयज्ञोपवीतिने नमः

ॐ दुर्धर्षाय नमः
ॐ बालदूर्वांकुरप्रियाय नमः
ॐ भालचंद्राय नमः
ॐ विश्वधात्रे नमः
ॐ शिवपुत्राय नमः
ॐ विनायकाय नमः
ॐ लीलासेविताय नमः
ॐ पूर्णाय नमः
ॐ परमसुंदराय नमः
ॐ विघ्नांधकाराय नमः
ॐ सिंदूरवरदाय नमः
ॐ नित्याय नमः
ॐ विभवे नमः
ॐ प्रथमपूजिताय नमः
ॐ दिव्यपादाब्जाय नमः
ॐ भक्तमंदराय नमः
ॐ शूरमहाय नमः
ॐ रत्नसिंहासनाय नमः
ॐ मणिकुंडल-मंडिताय नमः
ॐ भक्तकल्याणाय
ॐ अमेयाय नमः
ॐ कल्याणगुरवे नमः
ॐ सहस्रशीर्ष्णे नमः
ॐ महागणपतये नमः

अष्टोत्तर शतं मत्रं 'गणानां त्वा' जपेद् बुधः ।
दिनेदिने सर्व सिद्धि सर्व विघ्नविनाशिनीम् ॥

ॐ गं गणपतये नमः

आरती

सेंदूर लाल चढायो अच्छा गजमुखको।
दोंदिल लाल विराजे सुतगौरी हरको।
हाथ लिये गुड़लड्डू साई सुरवरको।
महिमा कही न जाए लागत हूं पदको॥
जय जय जी गणराजा विद्यासुखदाता।
धन्य तुम्हारो दर्शन मेरा मन रमता।
जय देव जय देव॥ १॥
अष्टौसिद्धिदासी संकट कोवैरी।
विघ्नविनायक मंगलसूरत अधिकारी।
कोटिन सूर्य प्रकाशे ऐसी छबि तेरी।
गंडस्थल मदमस्तक झूले शशिबिहारी।
जय जय जी गणराजा॥२॥
भाव भगत से कोई शरणागत आवे।
संतत संपत सबही भरपूर पावे।
ऐसे तुम महाराज मोको अति भावे।
गोसावीनंदन निशिदिन गुण गावे।
जय जय जी गणराज॥ ३॥